रुहानी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं उसका नाम क्या है?यहां जो बैठे हैं तो बच्चों को अच्छी रीति याद रहना चाहिए कि इस दुनियां में जो पार्ट है सो अब पूरा होता है।नाटक जब पूरा होने पर आता है तो सभी एक्टर्स समझ जाते हैं कि अभी हमारा पार्ट पूरा हुआ। अब जाना है घर। तुम बच्चों को भी बाप ने अभी समझ दी है। यह समझ और कोई में नहीं है।इसका मतलब कि बेसमझ हैं। तुम्हारे में अभी समझ है। बाप ने समझदार बनाया है।बच्चों अब नाटक पूरा होता है।यह है बेहद की बात।बच्चों की बुद्धि में यह जरूर होना चाहिए कि अब बेहद का नाटक पूरा होता है। अब फिर नये सिर चक्र शुरू होना है। नई दुनियां में सतयुग था। अब पुरानी दुनियां में इस कलियुग का अंत है। यह बातें तुम्ही जानते हो जिनको कि बाप मिला है।नये जो आते हैं उनको भी समझाना है कि अब पार्ट पूरा होता है। कलियुग अंत के बाद फिर सतयुग रिपीट होता है। ....सब जो हैं उनको वापस जाना है अपने घर। अब नाटक पूरा होता है।इससे मनुष्य फिर समझ लेते हैं कि प्रलय होती है। अब तुम जानते हो कि पुरानी दुनियां का विनाश कैसे होता है। भारत तो अविनाशी खंड है।बाप भी यहां ही आते हैं। बाकी और सब खंड खलास हो जावेंगे। यह खयालात और कोई की बुद्धि में आ नहीं सके। बाप तो बच्चों को समझाते हैं कि अब नाटक पूरा होता है फिर रिपीट होना है।आगे नाटक का नाम भी तुम्हारी बुद्धि में नहीं था। कहने मात्र सिर्फ कह देते हैं कि यह सृष्टि नाटक है और हम सभी एक्टर्स हैं। आगे जब हम कहते थे तो शरीर को समझते हैं। अब बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। अब हमको वापस घर जाना है। वो है स्वीट होम। इस निराकारी दुनियां में हम आत्मायें रहती हैं।यहां ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं है।अभी तुम संगम पर हो। जानते हो कि अभी हमको वापस जाना है। भक्ति खतम होती है। पुरानी दुनियां खतम तो भक्ति भी खतम। तुम जानते हो पहले2 कौन आते हैं। कैसे यह धर्म नम्बरवार आते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। यह बाप ही नई बातें समझाते हैं। कोई और समझा ही नहीं सकते। बाप भी एक ही बार आकर समझाते हैं। ज्ञान सागर बाप आते ही एक बार जबकि नई दुनियां की स्थापना पुरानी दुनियां का विनाश करवाना होता है।बाप (की) याद के साथ यह चक्र भी बुद्धि में रहना चाहिए। अब नाटक पूरा होता है।हम जाते हैं घर।पैसे भी खर्च किये ,भक्ति करते2 हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गये। दुनियां ही पुरानी हो गई है। नाटक को पुराना हुआ नहीं कहेंगे। नाटक तो कब पुराना होता ही नहीं है। नाटक तो नित नया है।यह तो चलता ही रहता है। बाकी दुनियां पुरानी होती है। हम एक्टर्स तमोप्रधान दुःखी हो जाते हैं। थक जाते हैं। सतयुग में थोड़े ही थकेंगे। कोई बात में थकने ,तंग होने की बात नहीं है। यहां तो अनेक प्रकार की तंगी देखने में आती है। तुम जानते हो कि यह पुरानी दुनियां खतम होनी है। सम्बंधी आदि कुछ भी याद ना आना चाहिए। एक बाप को ही याद करना है जिनसे विकर्म विनाश होंगे। विकर्म विनाश करने का और कोई उपाय ही नहीं है।गीता में भी मनमनाभव अक्षर है ;परंतु और कोई भी समझ ना सकें। बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो।तुम विश्व के वारिस अर्थात् मालिक थे। सतोप्रधान थे। अब तमोप्रधान बन गये हो।फिर बाप द्वारा अब तुम विश्व के मालिक बन रहे हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। अब तुम कौड़ी से हीरे मिसल बन रहे हो। यहां पर तुम आये ही हो बाप से वर्सा लेने। अब तुम बनते हो गार्डन ऑफ फ्लावर्स। सतयुग गार्डन है तो कितना सुंदर है। फिर धीरे2 कलायें कम होती जाती हैं। दो कला कम हुई तो गार्डन मुरझाने लगा। अब तो कांटों का जंगल हो गया है। मिरुआ और मनुष्यों में कोई फर्क ही नहीं रहा है।मनुष्य मिरुआ से भी बदतर हो गये हैं। अब तुम यह जानते हो।दुनियां को कुछ भी पता नहीं है। यह नालेज तुमको मिल रही है।यह है नई दुनियां के लिए नई नालेज।नई दुनियां स्थापन होती है। करने वाला है बाप। सृष्टि का रचता बाप है। याद भी बाप को ही करते हैं कि आकर हैवन रचो।

सुखधाम रचो। तो जरूर दुःखधाम का विनाश होगा ना। बाबा तो रोज2 समझाते रहते हैं। इसको धारण कर फिर समझाना है।पहले2 मुख्य बात समझानी है कि हमारा बाप कौन है जिससे वर्सा पाना है। भक्तिमार्ग में भी गॉडफादर को ही याद करते हैं कि हामरे दुःख हर कर हमको सुख दो तो तुम बच्चों की बुद्धि में यह स्मृति रहनी चाहिए। स्कूल्स में स्टुडेंट्स की बुद्धि में नालेज याद रहती है ना कि घर–बार।स्टुडेंट्स लाइफ में धंधे–धोरी आदि की कोई बात ही नहीं होती है। स्टडी ही याद रहती है। यहां तो फिर कर्म करते गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप कहते हैं कि स्टडी करो। ऐसे नहीं कहते कि सन्यासियों के मुआफिक स्टडी छोड़ दो। यह है ही राजयोग प्रवृत्ति मार्ग कां सन्यासियों को भी तुम कह सकते हो यह तुम्हारा है हठयोग। तुम घर–बार छोड़ते हो। यहां वो बात नहीं है। यह दुनियां ही कैसी गंदी है। क्या2 लगा पड़ा है। गरीब आदि कैसे रहे पड़े हैं।बाहर से जो टूरिस्ट आते हैं उनको तो अच्छे2 स्थान दिखाते हैं। गरीब आदि कैसे गंदे में रहे पड़े हैं वो थोड़े ही दिखाते हैं। जैसे बॉम्बे में कोई आवेंगे..... .....। भल यह है तो नर्क ही मगर उसमें भी फर्क तो है ना। साहुकार लोग कहां रहते हैं। कर्मों का हिसाब है ना।सतयुग में ऐसे गंदे हो नहीं सकते।वहां भी फर्क तो रहता है ना। कोई तो सोने के महल बनावेंगे,कोई चांदी के ,कोई ईंटों के। वहां इतने सब धर्म रहेंगे नहीं। यहां तो कितने खंड हैं। एक योरुप खंड ही कितना है। वहां पर तो सिर्फ हम ही होंगे। यह भी बुद्धि में रहे कि हर्षित अवस्था रहे। स्टुडेंट्स को बुद्धि में स्टडी ही याद रहती है।बाप और वर्सा। यह तो बहुत समझाया जाता है।बाप और वर्सा। वो तो कह देते लाखों हजार वर्ष। यहां पर तो बात ही 5000वर्ष की है। तुम बच्चे समझ सकते हो कि अब हमारी राजधानी की स्थापना हो रही है। बाकी सारी दुनियां खतम हो जानी है।यह पढ़ाई है ना।बुद्धि में यही याद रहे कि हम स्टुडेंट हैं। हमको भगवान पढ़ाते हैं तो भी कितनी खुशी रहे। यह क्यों भूल जाता है?माया बहुत प्रबल है।यह भी भुला देती है। स्कूल में सब स्टुडेंट्स पढ़ रहे हैं। सब ब्रांचिज वाले जानते हैं कि हमको भगवान पढ़ाते हैं। वहां पर तो अनेक प्रकार की विद्या पढ़ाई जाती है। अनेक टीचर्स होते हैं। यहां पर तो एक ही टीचर है। एक ही स्टडी है। बाकी नाईव टीचर तो जरूर चाहिए। स्कूल एक स्कूल है। बाकी सब ब्रांचिज है। पढ़ाने वाला एक बाप है।बाप आकर सबको सुख देते हैं। तुम जानते हो कि आधा कल्प हम सुखी रहे हैं। तो यह भी खुशी रहनी चाहिए ना कि शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा रचना रचते हैं स्वर्ग की।हम स्वर्ग का मालिक बनने के लिए पढ़ते हैं।कितनी खुशी अंदर में रहनी चाहिए। वो स्टुडेंट्स भी खाते–पीते सब कुछ काम घर का करते हैं। हां, कोई2 हॉस्टेल में रहते हैं कि जास्ती ध्यान पढ़ाई पर रहे।यहां तो हास्टल में रहने वालों से भी बाहर में रहने वाले जास्ती पढ़ते हैं। सर्विस करने लिए भी बच्चियां बाहर में रहती हैं। किस2 प्रकार के मनुष्य आते हैं। यहां पर तो तुम कितने सेफ बैठे हो। कोई अंदर घुस ना सके। यहां कोई का संग नहीं। पतित से बात करने की दरकार नहीं। बाहर में तो कैसे2 शैतान आ जाते हैं। यहां कोई से बात ना करनी है। तुमको तो कोई का मुंह देखने की भी दरकार नहीं है। फिर भी बाहर रहने वाले तीखे चले जाते हैं। कितना वंडर है। बाहर वाले कितनों को पढ़ाकर और आप समान बनाकर फिर ले जाते हैं। बाबा समाचार पूछते हैं। पेशेंट को ले आते हैं ;क्योंकि बहुत बीमार है तो उनको सात रोज भट्ठी में रखा जाता है। यह जैसे कि तुम ब्राह्मणों का एक गांव है। यहां पर कोई शूद्र ले ना आना है। यहां बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। विश्व का मालिक बनना है तो फिर चलन भी तो वैसी चाहिए न। आगे चलकर तुमको बहुत सा. होते रहेंगे कि वहां क्या2 होगा?जनावर भी कैसे अच्छे2 होंगे। सभी अच्छी चीजें होंगी। सतयुग की कोई चीज यहां हो ना सके। वहां फिर यहां की कोई चीज हो ना सके। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम स्वर्ग के लिए परीक्षा पास कर रहे हैं।जितना

पढ़ेंगे और फिर पढ़ावेंगे। टीचर बनकर औरों को रास्ता बताना है। सब टीचर्स हैं। सबको टीच करना है। बैजिजें तो बाबा ने दिये हैं। बैज समझानी अलग है। गीता का भगवान कौन ..... चित्र की समझानी अलग है। पहले2 तो बाप की पहचान देकर बताना है कि बाप से यह वर्सा मिलता है। गीता बाप ने सुनाई।कृष्ण ने बाप से सुनकर यह पद पाया। प्रजापिता ब्रह्मा ब्राह्मण भी यहां ही चाहिए। ब्रह्मा भी पढ़ते हैं शिवबाबा से। तुम अभी पढ़ते हो विष्णुपुरी में जाने के लिए। यह है तुम्हारा अलौकिक घर। लौकिक पारलौकिक फिर अलौकिक।नई बात है ना। भक्तिमार्ग में कब ब्रह्मा को याद नहीं करते हैं। ब्रह्मा बाबा किसको कहना आता ही नहीं। शिवबाबा को याद करते हैं कि दुःखों से छुड़ाओ। वो है पारलौकिक बाप। यह फिर है आलौकिक बाप। इनको तुम सूक्ष्मवतन में भी देखते हो। फिर यहां भी देखते हो। लौकिक बाप तो यहां देखने में आता है। पारलौकिक बाप को तो परलोक में ही देख सकते हैं।यह फिर आलौकिक है।वंडरफुल। यह ब्रह्मा कहां से आया?सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा है। तुम फिर ब्राह्मण कहां से (आये)?यज्ञ कैसे रचा जावेगा?इस अलौकिक बाप को ही समझने में मूंझते हैं। वो तो फिर भी कहेंगे निराकार है। लिंग भी कहते हैं ना। वो फादर है। तुम कहेंगे वो बिंदी है। वो करके अखंड ज्योति वा ब्रह्म भगवान कह देते हैं। अनेक मतें हैं ना। तुम्हारी तो एक ही मत है। एक द्वारा बाप ने मत देनी शुरू की फिर बुद्धि देखो कितनी होती गई। तो तुम बच्चों को बुद्धि में यह रखना चाहिए कि शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। पतित से पावन बना रहे हैं। रावण राज्य में जरूर पतित,तमोप्रधान बनना ही है। नाम ही है पतित दुनियां। सब दुःखी भी हैं। तब तो बाप को याद करते हैं कि हमारे दुःख हर कर हमको सुख दो। सब बच्चों का बाप एक है।वो तो सबको सुख देंगे ना। नई दुनियां में तो सुख ही सुख है। बाकी सब शांतिधाम में रहते हैं।यह बुद्धि में रहना चाहिए।अभी हम जावेंगे शांतिधाम। आज क्या है ,देखो फिर कल क्या होगा। जितना2 नजदीक आते जावेंगे तो आज की दुनियां क्या है ,कल की दुनियां क्या होगी वो देखते जावेंगे। स्वर्ग की बादशाही नजदीक देखते रहेंगे। जैसे मुसाफिरी से लौटते थे तो तुमको सिंध के बाग नजर आते थे। तुम बच्चों की बुद्धि में रहे कि स्कूल में बैठे हैं। शिवबाबा इस रथ पर सवार होकर आये हैं।हमको पढ़ाते हैं।यह भागीरथ है। बाप आवेंगे भी जरूर एक ही बार। भागीरथ का नाम क्या है सो भी किसको पता नहीं है। यहां जब आकर बैठते हो तो बुद्धि में यह याद रहे कि शिवबाबा आये हुये है। हमको सृष्टिचक्र का राज बता रहे हैं। अब नाटक पूरा होता है। अब हमको जाना है। यह बुद्धि में रखना कितना सहज है ;परंतु यह भी याद कर नहीं सकते हैं कि अभी चक्र पूरा होता है। अब हमको जाना है। फिर नई दुनियां में आकर पार्ट बजाना है। फिर हमारे बाद फलाने2 आवेंगे। तुम जानते हो कि यह सारी चक्र कैसे फिरता है। दुनियां वृद्धि को कैसे पाती है।नई से पुरानी फिर पुरानी से नई होती है। विनाश के लिए तैयारियां भी देख रहे हो। नैचुरल कैलेमिटीज भी होती है। इतने बाम्ब्स बना रखे हैं तो काम में तो आते हैं ना। बाम्ब्स से ही इतना काम होगा जो फिर मनुष्यों से लड़ाई करवाने की दरकार ही नहीं रहेगी। लश्करों को फिर छोड़ते जावेंगे। .....ठोकते जावेंगे। फिर इतने सब मनुष्य नौकरी से छूट जावेंगे तो भूखों मरेंगे ना। यह सब होने का है। फिर सिपाही आदि का भी क्या करेंगे?अर्थक्वेक्स होते रहेंगे। बाम्ब्स गिरते रहेंगे। एक/दो को मारते–पीटते रहेंगे। खूनी नाहक खेल तो होना है ना। दिल से पूछना चाहिए कि हमको क्या याद पड़ता है। अगर बाप की याद नहीं है तो जरूर बुद्धि कहीं भटकती है। विकर्म विनाश ना होंगे। पद भी कम हो जावेगा ;परंतु सर्विस नहीं करते हैं ,बाप को याद नहीं करते हैं तो दिल पर भी नहीं ठहरते हैं। सर्विस नहीं करते हैं तो बहुतों को तंग करते रहते हैं। कोई तो बहुतों को आपसमान बनाकर और बाप के पास ले आते हैं। तो बाबा भी देखकर खुश होते रहते हैं। अच्छा, मेरे होवनहार देवताओं प्रति अपने बाप वा दादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।